आर्यों के धर्म की सरलता और उत्कृष्टता

प्राचीन आर्यों का धर्म अत्यन्त सरल था। ये लोग यज्ञ अवश्य करते थे किन्तु यज्ञों की विधि अभी जटिल नहीं होने पाई थी। मूर्ति-पूजा का प्रचार नहीं था और न मन्दिरों के निर्माण की आवश्यकता समझी गई। बहुत से देवताओं की उपासना करते हुए आर्यों को एकेश्वरवाद का आभास होने लगा था। ऋग्वेद के दशम मण्डल में एकेश्वरवाद की भावना दिखाई पड़ती है जिसमें यह कहा गया है कि एक ही ईश्वर को अनेक नामों से पुकारा जाता है। बहुदेववाद के मध्य एकेश्वरवाद की यह भव्य और मधुर कल्पना भारत की धार्मिक विचारधारा की अपनी विशेषता है। इस प्रसिद्ध मन्त्र में एकेश्वरवाद की भावना व्यक्त की गई है। "जिसने जीवन तथा शक्ति दी है, समस्त देवताओं के ऊपर जिसका अनुशासन है, अमरता जिसकी छाया और मृत्यु जिसकी दासी है उसके अतिरिक्त हम यज्ञ की बलि किसे दें ?"

नैतिकता पर आग्रह

वैदिक आर्यों के धार्मिक विचारों पर नैतिकता की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है। उनके एक देवता वरुण थे जो नैतिक व्यवस्था द्वारा संसार को चलाते थे। वरुण की प्रसंशा में अनेक ऋचायें कही गई हैं जिनमें भक्ति भावना व्यक्त हुई है। वरुण प्रत्येक व्यक्ति के पाप-पुण्य को देखते हैं और अपराधी को दण्ड देते हैं। किन्तु उनमें क्षमाशीलता भी बहुत है और शुद्ध भाव से प्रार्थना करने पर वे तुरन्त क्षमा कर देते हैं।

राजनैतिक जीवन

ऋग्वेद में आर्यों की राजनीतिक चहल-पहल का काफी उल्लेख प्राप्त होता है जिसका अध्ययन करने के लिए हमें निम्नलिखित शीर्षक लेने चाहिए :—

राजा

राजा की शक्ति अनियन्त्रित नहीं होती थी। उसके ऊपर धर्म का नियन्त्रण था। दुष्टों को दण्ड देना और गुणवानों को पुरस्कृत करना राजा के प्रमुख कर्त्तव्य थे। युद्ध में राजा अपने जन का नेतृत्व करता था और शान्ति काल में न्याय की स्थापना का प्रयत्न करता था और जनता के सदाचार की रक्षा का भी ध्यान रखता था।

सभा और समिति

सभा और समिति नाम की संस्थाओं का आर्यों के राजनीतिक संगठन में काफी महत्व रहता था। ये संस्थायें राजा की शक्ति पर नियन्त्रण रखकर उसे निरंकुश होने से रोकती थीं। सभा और समिति के वास्तविक स्वरूप, कर्त्तव्य आदि के विषय में विद्वानों की धारणायें काफी भिन्न-भिन्न हैं क्योंकि ऋग्वेद में कहीं भी सभा व समिति का निरूपण नहीं किया गया है। कदाचित समिति सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करती थी और सभा के सदस्य अभिजात वर्ग के लोग होते थे।

राज-कर्मचारी

शासन कार्य में राजा को सहायता प्रदान करने के लिए कई कर्मचारी होते थे। राज-कर्मचारियों में पुरोहित, सेनानी तथा ग्रामीण प्रमुख होते थे। पुरोहितों को ऋग्वैदिक शासन-व्यवस्था में काफी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वह राजा के धार्मिक

व्यापार

आर्य लोग पशु-पालन के अतिरिक्त व्यापार भी करते थे। समाज में व्यापारियों को 'पणि' कहते थे जिनका समाज में एक विशेष वर्ग होता था। जल-थल दोनों मार्गों से व्यापार होता था। इस काल में मुद्रा-प्रचलन कम था। गाय ही विनिमय का माध्यम थी। धीरे-धीरे लोग 'निष्क' नामक सुवर्ण के आभूषण को विनिमय के लिए व्यवहृत करने लगे। आर्य लोग बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के व्यापार करते थे। ईरान तथा बेबीलोनिया से आर्यों का व्यापारिक सम्बन्ध था और भारत में ही पश्चिम एशिया वालों ने कपास की खेती करना सीखा।

गृह-उद्योग या दस्तकारी

आर्य लोग व्यवसाय भी करते थे। बढ़ई रथ, हल, गाड़ियाँ आदि बनाता था। औद्योगिक कलाकारों में बढ़ई को सबसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। धातुओं की वस्तुओं का विशेष प्रचलन होने के कारण कर्मार (लोहार) और हिरण्यकर (सोनार) को भी सम्मानित स्थान प्राप्त था। वस्त्र बुनने के लिए जुलाहे तथा बुने हुए वस्त्र को रंगने के लिए रङ्गरेज भी थे। स्त्रियाँ चटाई आदि बुना करती थीं। चमार भी समाज में विद्यमान था जो चमड़े की वस्तुएँ तैयार करता था।

धार्मिक जीवन

वैदिक सभ्यता का सबसे विकसित रूप हमें आर्यों के धार्मिक जीवन में प्राप्त होता है। प्रकृति पूजा से लेकर एकेश्वरवाद की कल्पना इसकी विशेषता है।

बहुदेवोपासना

आर्य लोग अनेक देवताओं की उपासना करते थे। ऋग्वेद में ३३ देवताओं की कल्पना की गई है। सूर्य की उपासना विभिन्न रूपों में की जाती थी जैसे—सूर्य, सवितर, विष्णु, मित्र, पुषन, द्यौस, उषस तथा वरुण। ऋग्वेद में सब से अधिक ऋचाएँ इन्द्र की प्रशंसा में कही गई हैं। इन्द्र वृष्टि द्वारा अनर्वर भूमि को कृषि योग्य बनाता है। इन्द्र को यज्ञों का प्रधान देवता कहा गया है। इसके बाद देव-मंडल में प्रमुख स्थान वरुण का है। इन्द्र की भाँति वे शारीरिक शक्ति के देवता नहीं बल्कि उनका प्रमुख कर्त्तव्य संसार में न्याय की स्थापना करना है। सौर मण्डल में सूर्य ही सब से अधिक मूर्तिमान देवता है। आर्यों के देव-मण्डल में अग्नि देवता को अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। उसी के द्वारा यज्ञ में होम की जाने वाली वस्तुएँ देवताओं तक पहुँचती हैं।

यज्ञों की बहुलता

दिनकर ने संस्कृति के चार अध्याय में लिखा है कि 'आर्य यज्ञों के बड़े प्रेमी थे। उनका समस्त जीवन यज्ञमय था। वे वर्षा के लिए यज्ञ करते थे, महामारी से बचने के लिए यज्ञ करते थे। जीवन में यज्ञ की इस व्यापकता के कारण उस समय के भारतीय समाज में पुरोहितों और ब्राह्मणों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया और यज्ञों की विधियों को निर्धारित करने के लिए जो ग्रन्थ बने, उनका नाम ही ब्राह्मण पड़ गया।' वैदिक भारतीयों के यज्ञों का उद्देश्य सांसारिक सुखों की वृद्धि था और ऐसे ही सुख वे स्वर्ग में भी पाना चाहते थे।